International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.3 Jan-Feb 2025

उन्नाव जनपद में जनसंख्या के स्थानिक वितरण प्रतिरूप के अंतर्संबंधों का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ अनुपमा सिंह[1],पवन कुमार राठौर[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

[2]शोधार्थी, (नेट) भूगोल विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज,छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Corresponding Author: डॉ अनुपमा सिंह

DOI- 10.5281/zenodo.17376502

सारांश

उन्नाव जनपद उत्तर प्रदेश के मध्य भाग में स्थित एक प्रमुख प्रशासनिक इकाई है, जहाँ जनसंख्या का स्थानिक वितरण अत्यंत विविध एवं असमान है! इस अध्ययन में जनसंख्या घनत्व, वृद्धि दर, नगरीकरण, साक्षरता, लिंगानुपात, तथा रोजगार संरचना जैसे घटकों के माध्यम से स्थानिक वितरण के प्रतिरूपों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उन्नाव जिले में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक एवं सामाजिक-आर्थिक कारकों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है। भूमि उपयोग पर कोई भी अध्ययन मनुष्य के विश्लेषण के बिना अधूरा है, क्योंकि मनुष्य भूमि उपयोग में बदलाव लाकर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए हमेशा सक्रिय रहता है। भूमि और मनुष्य के बीच संघर्ष, मनुष्य द्वारा भूमि पर की गई उपलब्धियों के विभिन्न चरणों में देखा जा सकता है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययन का तरीका चाहे कुछ भी हो, भूमि उपयोग से उसका घनिष्ठ संबंध उसके विश्लेषण के किसी भी चरण में नकारा नहीं जा सकता। हालांकि माल्थस और मार्क्स सिद्धांत दोनों मुख्य रूप से सामाजिक और मानव विकास के निश्चित रुझानों से संबंधित हैं, लेकिन उनका भूमि उपयोग की समस्या से सीधा संबंध है। जहाँ पहला सिद्धांत मनुष्य और भूमि के संबंध पर ज़ोर देता है, वहीं मार्क्सियन सिद्धांत कहता है कि मनुष्य और भूमि के बीच संबंध यह तय करता है कि भूमि का उपयोग कैसे होगा, न कि इसके विपरीत। इन दोनों दृष्टिकोणों से अलग, 'प्रायोगिक दृष्टिकोण' समस्या के निर्माण और उसके समाधान पर ज़ोर देता है, जो जांच के कार्यक्षमता सिद्धांत के रूप में होता है। मानव संसाधन, भूमि संसाधन जितना ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य भूमि पर दबाव डालने वाला सक्रिय तत्व है और वह विशाल और विविध भूमि संसाधनों से कई तरह के लाभ उठाता है। यह शोधपत्र उन्नाव जनपद में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों और उसके विकास पर प्रभाव का विश्लेषण करता है। पिछले दशकों में जिले की जनसंख्या में तीव्र हुई है, जिसने कृषि, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थय और संसाधन उपयोग पर दबाव डाला है। भौगोलिक दृष्टिकोण से जनसंख्या वृद्धि और विकास के मध्य गहरा संबंध है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च जन्मदर, निम्न दर और प्रवास जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारण हैं। सतत विकास के लिए शिक्षा, परिवार नियोजन और वैकल्पिक रोजगार के अवसरों का विस्तार आवश्यक है।

मुख्य शब्द: जनसंख्या वितरण, प्रतिरूप, घनत्व, नगरीकरण, उन्नाव जिला, भौगोलिक अध्ययन

प्रस्तावना

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, जहाँ जनसंख्या बढ़ रही है, अतिरिक्त महीनों के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। उन्नाव जनपद भी इससे अलग नहीं है, लेकिन उत्तर प्रदेश की उपजाऊ ज़मीन पर लाखों लोगों को बसाया जा सकता है। यह पता लगाने के लिए ज़मीन का अध्ययन करना होगा कि क्या ज़मीन आज के मुकाबले और अधिक अनाज पैदा कर सकती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय बदलाव आया है, जिससे विविधता और परिवर्तन हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी कृषि पर ही निर्भर है, क्योंकि सांस्कृतिक ढाँचा देश की कुल आय का आधा हिस्सा कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियों से आता है, जो देश के तीन-चौथाई कामकाजी लोगों को भोजन उपलब्ध कराती है। देश अभी भी कृषि पर निर्भर है और जनसंख्या बढ़ने के साथ, भारत को कृषि को अन्य किसी भी गतिविधि से अधिक विकसित करना होगा। अपने विशाल भूमि, जल और मानव संसाधनों के साथ, भारत एक कुशल देश बन सकता है। इस कार्य के लिए भारी संसाधनों की आवश्यकता होती है, तकनीकी कौशल और पारिस्थितिकी तंत्र का सावधानीपूर्वक प्रबंधन। भूमि का अध्ययन भौतिक संसाधनों

का अध्ययन है। जनसंख्या, अपनी मानव शक्ति की गुणवत्ता और मात्रा के माध्यम से संसाधनों का उपयोग करती है। सांख्यिकी संसाधनों के उपयोग का एक विशिष्ट पैटर्न है। इस संदर्भ में उन्नाव जनपद की जनसंख्या का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है। यह जिला गंगा के दक्षिणी मैदान के कृषि-समृद्ध और घनी आबादी वाले क्षेत्र में स्थित है। जहाँ जनसंख्या का स्थानिक वितरण और घनत्व मिट्टी की क्षमता और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से निकटता से संबंधित है। जनसंख्या का स्थानिक वितरण किसी भी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय स्थिति का दर्पण होता है। भौगोलिक दृष्टि से जनसंख्या का वितरण न तो समान होता है और न ही स्थिर। उन्नाव जनपद में यह वितरण विभिन्न भौतिक एवं सामाजिक कारकों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय (Study Area)

उन्नाव जनपद भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग का एक महत्वपूर्ण जिला है, जिसकी अवस्थिति: 26°08′ से 27°02′ उत्तर अक्षांश लेकर तथा 80°03′ से 80°03′ पूर्व देशांतर के मध्य अवस्थित है। जो इसकी कुल क्षेत्रफल: लगभग 4558 वर्ग किलोमीटर भू-भाग में फैला हुआ है । उन्नाव जनपद की जो सीमाएँ है, उत्तर में हरदोई, पूर्व में लखनऊ, दक्षिण में रायबरेली और पश्चिम में कानपुर तक विस्तार है। इस जनपद की कुल जनसंख्या (2011) के अनुसार 31,08,367 है, जिसमे 16,30,087 पुरुष व 14,78,280 महिला है। इस जनपद में प्रमुख नदियाँ: गंगा, मोरहा, सई आदि है। उन्नाव जनपद की भू-आकृतिक स्वरूप जो समतल मैदानी क्षेत्र है, जो जलोढ़ मिट्टी से युक्त है। उन्नाव, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के मध्य भाग में स्थित एक ज़िला है। ज़िले की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, और यहाँ की एक बड़ी आबादी खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों में लगी हुई है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, ज़िले में लघु उद्योग और पर्यटन जैसे अन्य क्षेत्रों में भी वृद्धि देखी गई है। उन्नाव जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, जहाँ गेहूँ, चावल, गन्ना और आलू प्रमुख फसलें हैं। यह जिला आम, अमरूद और अन्य फलों के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है पशुपालन जिले का एक अन्य महत्वपूर्ण व्यवसाय है, जिसमें डेयरी और मुर्गी पालन सबसे लोकप्रिय हैं। कृषि के अलावा, उन्नाव जिले में हाल के वर्षों में लघु उद्योगों का भी विकास हुआ है। इनमें चमड़े के सामान के लिए उन्नाव विश्व विख्यात है। जिले में बड़ी संख्या में लघु कृषि आधारित उद्योग भी हैं। उन्नाव ज़िले में पर्यटन एक और उभरता हुआ क्षेत्र है, जहाँ कई ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल हैं जैसे चंद्रिका देवी मन्दिर, तकिया पाटन मजार, जानकी कुण्ड तथा नवाबगंज पक्षी विहार है जो देश भर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं कुल मिलाकर कृषि उन्नाव जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बनी हुई है, लघु उद्योग और पर्यटन जैसे अन्य क्षेत्रों के विकास ने अर्थव्यवस्था में विविधता लाने और स्थानीय आबादी को रोजगार के अवसर प्रदान करने में मदद की है।

अध्ययन क्षेत्र उन्नाव जनपद का मानचित्रण

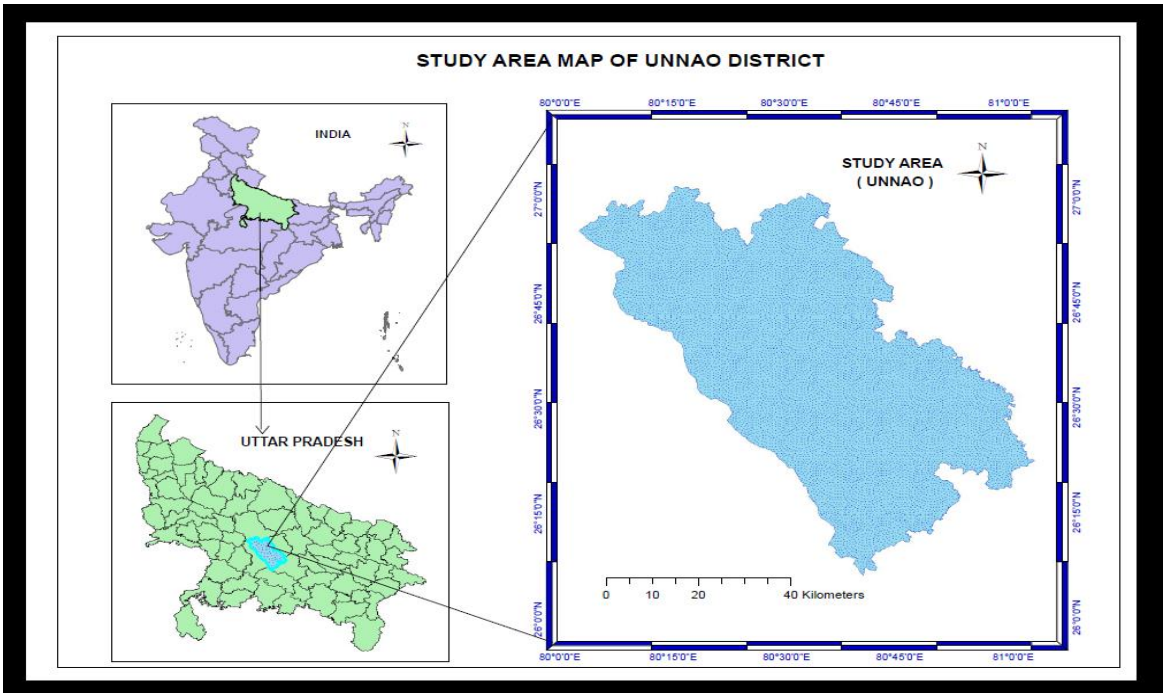

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

यह शोध कार्य उन्नाव जनपद में जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण के भौगोलिक समीक्षा को ज्ञात करने के उद्देश्य से किया गया है, क्योंकि किसी भी अध्ययन के कुछ न कुछ उद्देश्य होते हैं। बिना किसी उद्देश्य के शोध—कार्य संभव नहीं है। शोध को दशा एवं दिशा प्रदान करने के लिए स्पष्ट उद्देश्यों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध—परियोजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- उन्नाव जनपद में जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण करना।
- जनसंख्या घनत्व एवं वृद्धि दर के स्थानिक अंतरों का अध्ययन।
- वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक एवं आर्थिक कारकों की पहचान करना।
- जनसंख्या वितरण एवं संसाधनों के बीच संबंध स्थापित करना।

आंकड़ों का स्रोत एवं पद्धति (Data Sources and Methodology)

आँकड़ों के द्वितीयक स्रोत (Sources of secondary data): प्रस्तुत शोध—प्रबंध के द्वितीयक आँकड़ों के निम्नलिखित स्रोत हैं—

द्वितीयक आँकड़ों का संकलन विभिन्न सरकारी एवं गैर—सरकारी, प्रकाशित एवं अप्रकाशित किताबों, लेखों एवं शोध—पत्रों से लिया गया है। इसके अलावा समाचार पत्रों, पत्र—पत्रिकाओं, इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा इंटरनेट आदि के द्वारा भी शोध—प्रबंध से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन किया गया है।

इस संदर्भ में राय (2016, पृ.301) महोदय, ने कहा है, कि "दस्तावेज को व्यक्तिगत या सामूहिक विकास की एक प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है, इससे निपटने वाली स्थितियों की जटिलता पर एक मात्र सीमा यह है कि इसके लेखक को अपने विचार और उपचार में पर्याप्त रूप से स्थितियों को अपनाने में सक्षम होना चाहिए।"

विधितंत्र (Methodology)

किसी भी शोध—प्रबंध का सफल सम्पादन सुविकसित विधितंत्र के अभाव में संभव नहीं है। भूगोल किसी स्थान पर मानव के निवास्य और उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक साधनों का भी अध्ययन करता है। इसके संकल्पानात्मक पक्ष को समझने एवं इसे कार्यरूप प्रदान करने में अनेक विधियाँ सहयोगी होती हैं, जिन्हें भूगोल का विधितंत्र कहा जाता है (दीक्षित, 2005, पृ.306)। प्रस्तुत शोध परियोजना हेतु निम्नलिखित विधितंत्रों का सहारा लिया गया है।

- आँकड़ों की प्रकृति के अनुसार उनका वर्गीकरणा किया गया।
- वर्गीकृत आँकड़ों के आधार पर तालिकाओं, चित्रों एवं मानचित्र आदि का निर्माण किया गया।
- तालिकाओं, चित्रों एवं मानचित्रों के आधार पर आँकड़ों का भौगोलिक विश्लेषण किया गया।

जनसंख्या का स्थानिक वितरण एवं घनत्व-

जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व में आभासी समानार्थकता मिलती है परन्तु इनका मूल तात्पर्य एवं व्यावहारिक प्रयोग अलग-अलग अर्थों में होता हैा यद्यपि ये इतने घनिष्ठ रूप से अर्न्तसम्बन्धित है कि दोनों के अध्ययन प्राय: साथ-साथ होते है क्योंकि जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं के लिए जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व की व्याख्या अत्यधिक महत्व रखती है, अत: इनका भली-भांति ज्ञान सम्पूर्ण जनांकिकीय घटकों के विश्लेषण क कुंजी है। जनसंख्या का वितरण पृथ्वी पर जनसंख्या के क्षेत्रीय प्रतिरूप से सम्बन्धित है तथा यह रेखीय, विखंडित, केन्द्रक, वृत्ताकार आदि प्रतिरूपों में हो सकता है जबकि जनसंख्या का घनत्व, जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के अनुपात को व्यक्त करता है।

जनपद में जनसंख्या का वितरण-

जनपद में जनसंख्या के वितरण का सीधा सम्बन्ध, यहां के भौतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं जैसे- धरातल, मिट्टी, आर्थिक क्रियाओं, ऐतिहासिक तथा धार्म्रिक पृष्ठभूमि से है। जनसंख्या के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए जनसंख्या वितरण का प्राथमिक महत्व होता है क्योंकि एक तरफ तो जनसंख्या वितरण स्थल से सम्बन्ध रखता है और दूसरी तरफ यह जनसख्या की अन्य विशेषताओं से भी सम्बन्धित है। संयुक्त राष्ट्र के बहुभाषीय जनांकिकी कोष में जनसंख्या वितरण शब्द की व्याख्या निम्न शब्दों में की गई है – प्रत्येक जनसंख्या किसी दिये गये क्षेत्र में निवास करती है तथा जनसंख्या के भौगोलिक या स्थानिक वितरण का अध्ययन उस तरीके को प्रदर्शित करता है। जिसके अन्तर्गत मानव उस दिये गये क्षेत्र में वितरित होता है। इस दृष्टि से जनसंख्या वितरण एक सूक्ष्म जनांकिकी विश्लेषण है जिसका मुख्य उदेश्य क्षेत्रीय विषमताओं को ज्ञात करना एवं उसके कारणों तथा परिणाम को जानना होता है। जनसंख्या वितरण क्षेत्र ही सांस्कृतिक अवस्थापनाओं एवं प्राकृति के साथ पारिस्थितिकी समायोजन के संन्दर्भों का सूचक है। सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकी काल जनसंख्या के स्थान विशेष पर बसने वाले अन्य क्रिया कलापों को निर्धारित करते है। बदलते सांस्कृतिक मूल्यों से भौतिक कार्यों का प्रभाव कम होता जा रहा है, जिसने जनसंख्या वितरण प्रतिरूप प्रभावित हुआ है।

जनसंख्या की सघनता एवं विरलता क्षेत्र के भौतिक संसाधन जैसे मिट्टी, धरातल की प्रकृति, जलापूर्ति

एवं सिंचाई तथा सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक कारकों के साथ'- साथ औद्योगिक विकास पर विशेष रूप से निर्भर करती है। ये कारक जनसंख्या के स्वरूप एवं जनासांख्यिकीय मूल्यों का प्रभावित करते है। जनसंख्या वितरण एक गतिशील प्रावस्था है। विकास की प्रक्रिया द्वारा सदैव प्रभावित होती रहती है। यह काल एवं स्थान के सापेक्ष्य में परिवर्तनीय है।

उन्नाव जनपद में जहां भौतिक एवं सांस्कृतिक सुविधाएं अनुकूल है, वहां जनसंख्या सघन है जहां इन सुविधाओं की उपलब्धता कम है, वहां अपेक्षाकृत जनसंख्या का समूहीकरण कम हुआ है। वस्तुत: जनसंख्या का वर्तमान वितरण प्रतिरूप अनेक स्थानीय कारकों से अंतर्संबंधित है। विशेषतौर से उन्नाव जनपद के जनसंख्या वितरण पर यहां की भौतिक एवं सांस्कृतिक लक्षणों, आर्थिक क्रियाओं एवं ऐतिहासिक तथा धार्मिक पृष्ठभूमि का प्रभाव देखने को मिलता है।

तालिका संख्या : 01

तहसील के अनुसार जनसंख्या का वितरण : जनपद उन्नाव

तहसील	कुल जनसंख्या	पुरुष जनसंख्या	महिला जनसंख्या	तहसील की कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
				ग्रामीण	नगरीय
सफीपुर	7,11,612	3,76,334	3,35,278	85.9	14.1
हसनगंज	7,19,998	3,79,298	3,40,700	92.2	7.8
उन्नाव	8,76,918	4,62,038	4,14,880	63.4	36.6
पुरवा	4,59,539	2,39,181	2,20,358	91.3	8.7
बीघापुर	3,40,300	1,73,236	1,67,064	96.0	4.0
कुल जनसंख्या	31,08,367	16,30,087	14,78,280	82.9	17.1

Source - Census of India 2011.

जनसंख्या घनत्व-

जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करने वाली व्यक्तियों की संख्या को प्रदर्शित करता है। दूसरों शब्दों में जनसंख्या घनत्व मानव भूमि अनुपात है। जिससे क्षेत्रफल एवं मानव के विविध पारस्परिक गुणों का अध्ययन होता है। जनसंख्या वितरण के अध्ययन से क्षेत्रीय जनाभार का अनुमान नहीं लग पाता है। इसके लिए घनत्व का ज्ञान आवश्यक है। जहां जनसंख्या घनत्व का कालिक विश्लेषण क्षेत्र में उपलब्ध संसाधन के उपयोग को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रदर्शित करता है। वहीं पर जनसंख्या घनत्व का स्थानिक विश्लेषण संसाधन के दोहन तथा कृष्येत्तर कार्यों के विकास की ओर इंगित करता है। क्षेत्र की आर्थिक उन्नति एवं आर्थिकी के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए क्षेत्र की जनसंख्या एवं संसाधनों के अनुपात का ज्ञान होना आवश्यक है। जनपद उन्नाव का औसत जनसंख्या घनत्व 857 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जो उत्तर प्रदेश के जनसख्या घनत्व 829 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर से अधिक है। इस क्षेत्र में जनसंख्या के अधिक होने कारण समतल उपजाऊ भूमि प्राचीन धार्मिक महत्व का स्थल है यहां सतत वाहिनी नदियां है। अध्ययन क्षेत्र में 2011 की जनगणनानुसार जनसंख्या घनत्व का अध्ययन तहसील स्तर पर किया गया है।

तालिका संख्या - 02

जनसंख्या घनत्व : जनपद उन्नाव (2011)

तहसील	कुल क्षेत्रफल (किमी ^{2})	कुल जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व/वर्ग कि0मी0
सफीपुर	1,025	7,11,612	755
हसनगंज	1,117	7,19,998	645
उन्नाव	1001	8,76,918	875
पुरवा	793	4,59,539	579
बीघापुर	793	3,40,300	547
कुल	4557	31,08,367	682

Source - Census of India 2011.

उपरोक्त तालिका संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सामान्य जनसंख्या घनत्व 682 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है । तहसील स्तर पर इसमें भिन्नता देखने को मिलती है। उन्नाव जनपद के तहसील सफीपुर, हसनगंज, उन्नाव, पुरवा, बीघापुर, तहसील में जनसंख्या घनत्व क्रमश- 755, 645, 875, 579,547व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व उन्नाव तहसील में 875 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर है, जबकि सबसे कम बीघापुर तहसील में 547 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर है।

निष्कर्ष (Conclusion)

उन्नाव में जनसंख्या के स्थानिक वितरण के प्रतिरूप बहुआयामी हैं जो भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होते हैं। स्थायी विकास के लिए जनसंख्या दबाव और संसाधन में संतुलन आवश्यक है। उन्नाव जनपद के जनसंख्या वितरण के भौगोलिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिले में जनसंख्या का स्थानिक वितरण अत्यंत असमान है। कुछ क्षेत्रों जैसे — सफीपुर, उन्नाव, हसनगंज में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया गया है, जबकि बीघापुर और पुरवा जैसे तहसील में घनत्व अपेक्षाकृत कम है। भौतिक कारकों जैसे — भूमि की उर्वरता, जल संसाधनों की उपलब्धता, जलवायु, तथा समतल स्थलरूप ने जनसंख्या के वितरण में प्रमुख भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त आर्थिक कारक जैसे — परिवहन सुविधा, बाजार की निकटता, औद्योगिक केंद्रों की उपलब्धता और शहरी प्रभाव भी जनसंख्या के सघन या विरल वितरण के निर्धारक रहे हैं। सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो साक्षरता, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और शिक्षा संस्थानों का विकास भी उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वहीं, कम घनत्व वाले क्षेत्रों में कृषि आधारित जीवनशैली, सीमित रोजगार अवसर और प्रवासन की प्रवृत्ति पाई जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उन्नाव जनपद में जनसंख्या वितरण का प्रतिरूप भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक कारकों का संयुक्त परिणाम है।

सुझाव (Suggestions)

- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करना।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का समान वितरण।
- परिवहन नेटवर्क का विस्तार।
- योजनागत क्षेत्रीय विकास नीतियाँ अपनाना।

संदर्भ (References)

1. भारत सरकार, जनगणना रिपोर्ट 2011, भारत सरकार प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
2. उत्तर प्रदेश राज्य योजना आयोग, आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23।
3. शर्मा, आर.सी. (2018). जनसंख्या भूगोल, राष्ट्रीय प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हुसैन, एम. (2017). भूगोल का क्षेत्रीय विश्लेषण, रावत प्रकाशन, जयपुर।
5. District Census Handbook, Unnao (2011), Directorate of Census Operations, U.P.
6. उत्तर प्रदेश सरकार, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, लखनऊ। "जनपद उन्नाव का सांख्यिकीय विवरण वर्ष 2021–22"।
7. सिंह, आर. एल. (2020). उत्तर प्रदेश का भूगोल, प्रयाग पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
8. मिश्रा, आर. एन. (2019). मानव भूगोल: सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, शारदा पब्लिकेशन, वाराणसी।
9. Government of India. (2021). District Census Handbook: Unnao, Census of India, Registrar General and Census Commissioner.
10. District Statistical Office, Unnao. (2022). District Statistical Abstract of Unnao.